ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

शोधपत्र शीर्षक

लघुरघुवरम् खण्डकाव्य में शिशुराघव

प्रस्तुतकर्ता

साकलिया प्रकाश एल

एम.ए एम.फिल (NET-JRF, SET)

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

लघुरघुवरम् खण्डकाव्य में शिशुराघव

'लघुरघुवरम्' खण्डकाव्य की रचना श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज ने की है । 'लघुरघुवरम्' काव्य का उपजीव्य रामायण है । इस काव्य में श्रीरामभद्राचार्य जी ने श्रीराम के शिशु अवस्था का वर्णन किया है । 'लघुरघुवरम्' में श्रीराम की स्तुति और जय-जयकार किया है ।

जयति जगति लघु रघुवर हरिरति विशति भजत इह सुखमधिकरि रति ।
सुरसरिदिवयदनुचरित मलयति निखिल भुवनमथ पतितसमलयति ।।

जो परमेश्वर भजन करने वालों को अलौकिक सुख प्रदान करते है तथा करि अर्थात् गजेन्द्र ने भी जिनके श्रीचरणों की भक्ति की, जिसका पालन चरित्र गंगाजी के समान समस्त संसार को व्याप्त कर रहा है और भवसागर में पतित जीव को पवित्र कर रहा है ऐसे लघुबालरूप में वर्तमान रघुकुल में श्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हरि श्रीराम की जय हो ।

जय दिनकर कुल वनरुह दिनकर जय तनु रुचि जित शिखिगल जगधर ।
जय हर हृदुंदज मधुकर मलहर जय दशरथसुत शिशु लघु रघुवर ।।

हे सूर्यकुल कमल के सूर्य श्रीराम आपकी जय हो । अपनी शोभा से मयूर के कण्ठ एवं बादल को जितने वाले श्यामसुन्दर आपकी जय हो । भगवान शंकर के हृदयरूप कमल के भ्रमर तथा भक्तों के मनोमल को दूर करने वाले प्रभु आपकी जय हो । हे दशरथनन्दन शिशुरूप लघुरघुवर छोटे सरकार आपकी जय हो ।

इसी प्रकार 'लघुरघुवरम्' में कई श्लोक में श्रीराम की स्तुति की गई है और आगे श्रीराम के शिशु राघव का विशिष्ट स्वरूप का चित्रण किया गया है ।

सूर्योदय से सनाथित दिशा अर्थात् पूर्व दिशा में चन्द्रमा की भाँति सूर्य, बृहस्पति, चन्द्रमा, मंगल और शनिश्चर के उच्चस्थ होने पर भानुमान महाराज की पुत्री भगवती कौसल्य में परब्रह्म परमात्मा प्रकट हुए ।

मंगलवार और चैत्र शुक्ल नवमी मध्याह्न में विमल बुद्धिबाले सन्तो का सम्मान करने वाले धनुर्बाण किये हुए त्रिभुवनपति भगवान श्रीराम प्रगट हुए ।

ISSN 2454-8596
www.vidhyayanaejournal.org
VIDHYAYANA
An International Multidisciplinary Research e-Journal

वदनतइ सख विभबमपिसहरति चिकुरनिकर रुचिभिरलिमनोहरति ।
चरणनलिनरत समलमपहरति दशरथविलसदजिहरइह विहरति ।।

वे प्रभु बाल राघव अपनी सुख कान्ति से काम के सखा चन्द्र का सौन्दर्य चुरा रहे है तथा अपने कुटिल मेत्रक केशो से भ्रमरों का अनुकरण कर रहे है । तथा श्री चरणकमलों मे निरत भक्तों के मल का अपहरण कर रहे है और इस पृथ्वी पर दशरथ जी के सुन्दर आँगन में विहार कर रहे हैं ।

शिशु राघव कहीं पर किलकले हैं, कही अत्यन्त चपल गति से चलने लगने है । कभी माता का दूध पीने के लिये पृथ्वी पर लेट जाते है तथा अत्यन्त स्पृहदालु होकर मुख से लार चुआते है और दूध पीने के लिये हठ करते हुए चारो और अपने वस्त्र बिखेर देते हैं । फिर मां का दूध पीने के लिए उन्हें मनाने का प्रयास करते है और व्याकुलतापूर्वक रोने लगते हैं ।

शिशु राघव का श्रीमुख चन्द्रमा को तिरस्कृत करता है । अहो भगवान की दोनों भुजाएँ हाथी के बच्चे को भी पीछे कर देते है तथा प्रभु के श्रीचरणकमल ब्रह्मा जी के पिता आदिकमल को भी परिभूत कर देते हैं ।

प्रभु श्रीराम अपने अपने छोठे हाथ एवं चरणों से चलते हुए बहुत सुन्दर लगते है, मीठी तोतली बोली बोलते हुए हँसते हैं । अपने मुख की कान्ति से चन्द्रमा को भी नीरस बना रहे है तथा अयोध्यारूप सरोवर में कमल की भाँति विकसित हो रहे है ।

कृत कररवमभि नटति परिशुकति कलबलमति मृदुवदति किल पिबति ।
विचरति विहसति विभुरति किलकतिसुखयति पितरमखिलमपितिलकति ।।

कही पर श्रीमुन्ना सरकार ताली बजाकर नाचते है, कभी तोते की बोली बोलते हैं, कभी मीठे-मीठे तोतले वचन सुनाते हैं कभी कोयल की भाँति बोलते हैं ।

इस प्रकार विचरण करते हुए बाल विहार करते हुए परमात्मा किलकते हैं और अपने पिताश्री को सुखी करते हुए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के तिलक बन जाते है ।

हे दशरथजी के पुण्यकल्पवृक्ष के सुन्दर फल अवधेश आपकीं जय हो जय हो । हे अशरणशरण भक्तों

के मल नष्ट करने वाले आपकी जय हो, जय हो । अपने तीक्ष्ण बाणों से कुटिल खलों का वध करने वाले आपकी जय हो, जय हो । हे गिरिधर के बल लघु बालरूपधारी रघुवर आपकी जय हो, जय हो ।

इति निजरतिहति मलमतिमपहर मम गिरि भणित मनघमिदमनुहर ।
लघुरघुवरमव नृपति तनय वर गिरिधर मनसि विहर लघुरघुवर ।।

इस प्रकार अपनी प्रीति को नष्ट करने वाली मेरी पापीयसी बुद्धि का हरण कर लीजिए । मेरी वाणी में कहे हुए निष्पाप इस लघुरघुवर नामक दीर्घमात्रारहित काव्य को अपने हृदय में धारण कीजिए । हे दशरथ राजकुमार मेरी रक्षा कीजिए, हे लघुरघुवर शिशुराघव! मुझ गिरिधर के हृदय में निरन्तर विहार कीजिए ।

इसी प्रकार 'लघुरघुवरम्' काव्य में श्रीराम के शिशु अवतार के गुण-गान गाये है । शिशु राघव बचपन में किस प्रकार अपनी लीलाये करते है उसका इस काव्य में निरूपण किया गया हैं ।

★ **सन्दर्भग्रन्थ**

(१) **लघुरघुवरम्** – (खण्डकाव्यम्) धर्मचक्रवर्ती जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्यजी महाराज (चित्रकूटधा) प्रकाशक-श्रीतुलसीपीठ सेवान्यास आमोदवन, चित्रकूटधाम (म.प्र.)